

## डॉलर-रुपया स्वैप

### प्रलम्बिस् के लयि:

डॉलर-रुपया स्वैप नीलामी, तरलता प्रबंधन पहल, मुद्रास्फीति, भुगतान संतुलन (बीओपी) संकट, सीमांत स्थायी सुवधि, स्थायी जमा सुवधि, मौद्रकि नीति।

### मेन्स के लयि:

मौद्रकि नीति।

## चर्चा में क्यों?

हाल ही में **भारतीय रज़िर्व बैंक** (RBI) ने अपनी तरलता प्रबंधन पहल के हसिसे के रूप में 5 बलियिन डॉलर-रुपए की स्वैप नीलामी आयोजति की। इस कदम से डॉलर का प्रवाह मज़बूत होगा और वत्तितीय प्रणाली से रुपए की नकिासी होगी।

- इससे महँगाई कम होगी और रुपए में मजबूती आएगी।

### भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में मांग आधारति मुद्रास्फीति में नमिनलखिति में से कसिके कारण/वृद्धि हो सकती है? (2021)

- इक्स्पैन्सनरी पालिसी
- राजकोषीय प्रोत्साहन
- मज़दूरी का मुद्रास्फीति-सूचकांक
- उच्च करय शक्ति
- बढ़ती ब्याज दरें

### नीचे दयि गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनयि:

- केवल 1, 2 और 4
- केवल 3, 4 और 5
- केवल 1, 2, 3 और 5
- 1, 2, 3, 4 और 5

उत्तर: (a)

## डॉलर-रुपया स्वैप नीलामी:

- यह एक वदिशी मुद्रा उपकरण (Forex Tool) है जसिसे केंद्रीय बैंक अपनी मुद्रा का उपयोग दूसरी मुद्रा या इसके वपिरीत खरीद के लयि करता है।
- डॉलर-रुपया खरीद / बकिरी स्वैप:** केंद्रीय बैंक भारतीय रुपए (INR) के बदले बैंकों से डॉलर (अमेरकि डॉलर या USD) खरीदता है और तुरंत बाद की तारीख में डॉलर बेचने का वादा करने वाले बैंकों के साथ एक वपिरीत (रुपए को बकना) सौदा करता है।
- जब केंद्रीय बैंक द्वारा डॉलर की बकिरी की जाती है तो समान मात्रा में रुपए की नकिासी होती है, इस प्रकार ससि्टम में रुपए की तरलता को कम होती है।
  - इन स्वैप परचालनों (Swap Operations) में कोई वनिमिय दर या अन्य बाज़ार जोखमि नहीं होते हैं क्योंकि लेन-देन की शर्तें अग्रमि रूप से नरिधारति की जाती हैं।

## RBI की योजना:

- RBI ने बैंकों को 5.135 बलियिन अमेरकि डॉलर बेचे और साथ ही स्वैप नपिटान अवधि के अंत में डॉलर को वापस खरीदने के लयि सहमति प्रदान की

है।

- यहाँ आशय यह है कि केंद्रीय बैंक वकिरेता से डॉलर प्राप्त करता है तथा दो वर्ष की अवधि के लिये संभव न्यूनतम प्रीमियम वसूल करता है।
- तदनुसार नीलामी की नचिली सीमा पर बोली लगाने वाले बैंक नीलामी में सफल होते हैं।
  - डॉलर की दर 75 रुपए मानकर ससिटम की तरलता 37,500 करोड़ रुपए कम हो जाएगी।

## वगित वर्षों के प्रश्न

प्रश्न. अंतरराष्ट्रीय तरलता की समस्या नमिनलखिति में से कसिकी अनुपलब्धता से संबंधित है? (2015)

- (a) वस्तुओं और सेवाओं
- (b) सोना और चांदी
- (c) डॉलर और अन्य कठोर मुद्राएँ
- (d) नरियात योग्य अधशेष

उत्तर: (c)

## आरबीआई अब इसका सहारा क्यों ले रहा है?

- ससिटम में अधशेष तरलता 7.5 लाख करोड़ रुपए आँकी गई है, जसि मुद्रास्फीति को संतुलित रखने के लिये रोकने की ज़रूरत है।
- आमतौर पर केंद्रीय बैंक रेपो रेट बढ़ाने या नकद आरकषति अनुपात (CRR) बढ़ाने जैसे पारंपरिक साधनों का सहारा लेता है लेकिन इसका अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।
  - यह नकारात्मक प्रभाव मौद्रिक नीति के अधूरे रूप में देखा जा सकता है।
  - इसलिये आरबीआई द्वारा पछिले वर्ष एक अलग टूलकटि- वेरिबल रेट रविरस रेपो ऑकशन (Variable Rate Reverse Repo Auction-VRRR) का इस्तेमाल कया गया।
- हालाँकि हाल ही में VRRR नीलामियों को बैंकों द्वारा कम कर दिया था, क्योंकि नकदी बाज़ार ने तत्काल और बेहतर प्रतफल की पेशकश की जसिसे RBI को वदिशी मुद्रा नीलामी जैसे दीर्घकालिक तरलता समायोजन उपकरण पर वचिर करने के लिये मजबूर होना पड़ा।

## स्वैप का प्रभाव:

- तरलता को कम करना: प्रमुख रूप से तरलता प्रभावित होगी जो वर्तमान में औसतन लगभग 7.6 लाख करोड़ रुपए घटेगी।
- भारतीय रुपए के मूल्यहरास की जाँच: बाज़ार में डॉलर के प्रवाह से रुपए को मज़बूती मिलेगी जो पहले ही अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 77 के स्तर पर पहुँच चुका है।
- मुद्रास्फीति पर नयित्रण: जब मुद्रास्फीति में वृद्धि का खतरा होता है तो आरबीआई आमतौर पर ससिटम में तरलता को कम कर देता है। नमिनलखिति कारकों के कारण मुद्रास्फीति बढ़ना तय है:
  - तेल की कीमतों में वृद्धि: रूस-यूक्रेन युद्ध के मद्देनज़र कच्चे तेल की कीमतों में वृद्धि से आने वाले दिनों में मुद्रास्फीति बढ़ना तय है।
  - संस्थागत नविश का बहरिवाह: वदिशी पोर्टफोलियो नविशक भारत से धन नकाल रहे हैं। उन्होंने मार्च 2022 में अब तक भारतीय शेयरों से 34,000 करोड़ रुपए नकाल लिये हैं, जसिका रुपए पर गंभीर दबाव पड़ा है।

## चलनधि प्रबंधन पहल क्या है?

- केंद्रीय बैंक की 'तरलता प्रबंधन' पहल को कुछ वशिषिट फ्रेमवर्क, उपकरणों के समूह और वशिष रूप से उन नयियों के रूप में परभाषित कया जाता है, जसि केंद्रीय बैंक द्वारा बैंक रज़िर्व की मात्रा को नयित्तरति कर कीमतों (यानी अल्पकालिक ब्याज दरों) को नयित्तरति करने हेतु कया जाता है, जसिका अल्पकालिक उद्देश्य मूल्य स्थिरता सुनिश्चित करना होता है।
  - बैंक रज़िर्व का आशय उस न्यूनतम राशि से है, जो वत्तितीय संस्थानों के पास होनी अनविर्य है।
- 'तरलता प्रबंधन' पहल रज़िर्व बैंक द्वारा मौद्रिक नीति में उपयोग कया जाने वाला एक उपकरण है, जो बैंकों को पुनरखरीद समझौतों (रेपो) के माध्यम से ऋण लेने या बैंकों को रविरस रेपो समझौतों के माध्यम से रज़िर्व बैंक को ऋण देने की अनुमति देता है।
  - इस फ्रेमवर्क के तहत वभिन्न उपकरण हैं:
    - रेपो/रविरस रेपो नीलामी
    - सीमांत स्थायी सुवधि (MSF)
    - वदिशी मुद्रा स्वैप

## वगित वर्षों के प्रश्न

प्रश्न: यदि भारतीय रज़िर्व बैंक एक वसितारवादी मौद्रिक नीति अपनाते हैं, तो वह नमिनलखिति में से क्या नहीं करेगा? (2020)

1. वैधानिक तरलता अनुपात में कटौती और अनुकूलन
2. सीमांत स्थायी सुवधि दर में बढ़ोतरी

3. बैंक रेट और रेपो रेट में कटौती

नीचे दिये गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिये:

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (b)

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Reference URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/dollar-rupee-swap>

